PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Navbharat Times, Delhi
Wed, 16 Aug 2017, Page 10
Width: 16.51 cms, Height: 38.35 cms, a3, Ref: 8.2017-08-16.67

प्रधानमंत्री के शब्द

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लालकिले की प्राचीर से दिए जाने वाले प्रधानमंत्री के भाषण को सिर्फ एक राजनेता का भाषण नहीं माना जाता। इसे देश के अभिभावक का संदेश समझा जाता है। माना जाता है कि इसमें पूरी सरकारी मशीनरी के लिए कुछ आदेश छिपे हैं, जिनकी जल्द ही तामील होने वाली है। निश्चय ही प्रधानमंत्री को भी इस बात का अहसास होगा। इसीलिए, जब उन्होंने कहा है कि आस्था के नाम पर हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी, तो यह मानकर चलना चाहिए कि जगह-जगह कोई न कोई बहाना खोजकर कमजोर तबकों के खिलाफ हिंसा पर उतारू हो जाने वाले तत्वों के खिलाफ अब सख्त कदम उठाए जाएंगे। पिछले कुछ समय से बूढ़ों और बच्चों तक को गो-तस्कर या गोमांस भक्षक बताकर कथित गोरक्षकों की भीड़ ने उन पर हमला किया, जिसमें कई जानें गई हैं। इससे पहले भी प्रधानमंत्री गोरक्षा के नाम पर हिंसा बर्दाश्त न करने की बात कह चुके हैं, लेकिन हमलावरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की कोई खबर अभी तक सामने नहीं आई है। इससे समाज में यह संदेश गया है कि प्रधानमंत्री के सबसे मुखर प्रशंसकों के लिए उनके शब्दों का कोई मूल्य नहीं है। यह भी कि हमलावरों को सत्तारूढ़ दल और उनके सहयोगी संगठनों का समर्थन और संरक्षण प्राप्त है। इस वजह से अल्पसंख्यकों में भय और असुरक्षा बढ़ गई है। क्या यह सिलसिला अब टूटेगा? इसी तरह प्रधानमंत्री ने कश्मीर समस्या के संबंध में कहा है कि इसका हल गोली और गाली से नहीं बल्कि गले लगाने से संभव है। कश्मीर में सुरक्षाबलों ने आतंकियों के खिलाफ अभियान चला रखा है। लेकिन इधर बीजेपी और उसके सहयोगी संगठनों के कुछेक नेताओं ने देश भर में ऐसा माहौल बना रखा है कि कश्मीर घाटी में सारे लोग आतंकियों के समर्थक हैं। मेरठ से लेकर मेवाड़ तक और जलंधर से लेकर बंगलुरु तक विभिन्न संस्थानों में पढ़ रहे कश्मीरी छात्रों पर हमले हुए हैं। पीएम ने कश्मीरियों को गले लगाने की बात कहकर एक अहम संदेश दिया है। पूरा देश कश्मीर के साथ खड़ा हो, आज की यह बड़ी जरूरत है। लेकिन क्या नरेंद्र मोदी अपनी पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं को कश्मीरियों की हिफाजत में आगे आने को कहेंगे। क्या उनके इस भाषण के बाद कश्मीरियों को लेकर दुष्प्रचार रुक जाएगा? क्या बीजेपी की राज्य सरकारें अल्पसंख्यकों पर हमला करने वाले सभी लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेंगी? ऐसा हो तो बहुत अच्छा, लेकिन इसमें अगर कोई हीला-हवाली दिखती है तो इससे प्रधानमंत्री पद की गरिमा घटेगी। फिर लोग लालकिले से दिए गए नरेंद्र मोदी के भाषणों को गंभीरता से लेना बंद कर देंगे। एक तरह से यह प्रधानमंत्री की व्यक्तिगत परीक्षा है। इस बार उन्हें अपने शब्दों को जमीन पर उतारकर दिखाना होगा।

रुके आस्था के नाम पर हिंसा